Sl.No. :

नामांक Roll No.

यहाँ से काटिए

No. of Questions – 3

No. of Printed Pages – 03

SS–34–DL–T.W. (Hindi) (Supp.)

उच्च माध्यमिक पूरक परीक्षा, 2024

SENIOR SECONDARY SUPPLEMENTARY EXAMINATION, 2024

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING HINDI)

समय : 1 **घण्टा**

पूर्णांक : 40

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।

2) प्रत्येक कागज के एक तरफ टंकण करें ।

3) प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है।

4) प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है।

5) हर प्रश्न के लिए 20% अंक सजावट के निर्धारित है।

यहाँ से काटिए

1) निम्न अवतरण को टंकित कीजिए –

टंकित अंक – 16
सजावट – 04
कुल अंक – 20

महादेवी के मूक साथी

यूं तो कमोबेश हर मनुष्य भावनात्मक रुप से कोमल होता है किन्तु कलाकार या रचनाकार अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील माने जाते हैं। सच भी है क्योंकि जो हृदय किसी अन्य की पीड़ा को अभिव्यक्ति दे, दिल दूसरे के दुख से व्यथित हो कर अपनी आंखें नम कर ले और जो व्यक्ति पराये दर्द को अपना दर्द बना ले वही सही मापने में संवेदनशील कहा जाएगा ।

महादेवी वर्मा जी के रचना संसार से गुजरते हुए हम पाते है कि वे न केवल मानव मन के दर्द की चितेरी थी बल्कि पशु–पक्षियों और जीव जन्तुओं के लिए भी उनका दिल उतनी ही शिद्दत से भर जाया करता था । उनके अनेक रेखा चित्र इस तथ्य की गवाही देते हैं कि महादेवी जी विभिन्न प्राणियों की सहचरी थी । कहना जरा अजीब सा लग रहा है किन्तु आपके संस्मरण पढ़ते–पढ़ते जान पड़ता है कि आपके आवास को मानवीय आवास कम और जंतुआलय कहना अधिक उचित होगा ।

गौरा, गाय, गिल्लू गिलहरी, सोना हिरनी, नीलकंठ मोर, निक्की नेवला, रोजी कुत्ती, रानी घोड़ी, नीलू कुत्ता और दुर्मुख खरगोश जैसे बहुत से चरित्र इस कथन की पुष्टि करते हैं कि उनका घर केवल उन्ही का निजी निवास नहीं था बल्कि उसमें कई पशु पक्षियों और जीव जन्तुओं का भी आवास था । इनमें से कुछ पात्र यथा गौर गाय और गिल्लू गिलहरी तो रचना संसार में जैसे अमर ही हो गए । यहाँ हम महादेवी जी के कुछ विशेष रेखाचित्रों के बारे में चर्चा करेंगे ।

सबसे पहले हम बात करते हैं नीलकंठ की जो कि एक मोर है। इसे महादेवी जी ने एक चिड़िया बेचने वाले बड़े मियां से खरीदा था । एक पक्षी का अपने सहजीवों के प्रति लगाव और उनकी सुरक्षा की भावना देखनी हो तो नीलकंठ का उदाहरण अति उत्तम कहा जा सकता है। नीलकंठ ने अपनी जान पर खेलते हुए अपने सहचर शिशु खरगोश को सांप का निवाला बनने से न केवल बचाया बल्कि रात भर उसे अपने पंखों में सहेज कर अपनेपन की उष्मा भी देता रहा । यह जंतुओं के आपसी सौहार्द का असाधारण प्रमाण है।

एक पक्षी को भी इतनी समझ होना आश्चर्य की बात हो सकती है कि जिस नुकीली चोंच से वह किसी विषधर को खण्ड खण्ड कर सकता है उसी चोंच से हथेली पर रखे भुने चने कितनी कोमलता से उठा उठा कर खाता है।

मनुष्य की तरह अपने प्रिय पात्र के प्रति गहन प्रेम और ईर्ष्या का भाव देखना हो तो इसी रेखाचित्र की एक अन्य पात्र कुब्जा मोरनी को देखा जा सकता है। इस मोरनी को भी वे घायल अवस्था में इन्हीं बड़े मियां के बाड़े से लेकर आई थी । कुब्जा मोरनी का नीलकंठ के प्रति एकतरफा प्रेम देखते ही बनता है। नीलकंठ का सामित्य प्राप्त हो या न हो किन्तु वह किसी अन्य को उसके समीप बर्दाश्त नहीं कर सकती । यहाँ तक कि कुढ़न की मारी कुब्जा अपनी प्रतिद्वंदी राधा के अंडे भी कितनी बेरहमी से नष्ट कर देती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि प्रेम और एकाधिकार की भावना मनुष्य और पशु पक्षियों में समान ही होती है।

गौरा गाय का रेखाचित्र महादेवी जी का अन्य अमर रेखाचित्र है जिसमें उन्होने एक ग्वाले की दुर्भावना का भी चित्रण किया है। गौरा गाय से सम्बंधित महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़कर मनुष्य को मनुष्य कहने में शर्म महसूस होने लगी । अपने तुच्छ स्वार्थ के चलते कैसे एक ग्वाले ने गाय जैसे निरीह पशु की हत्या की साजिश कर डाली । धीरे धीरे मौत के अंधकार की तरफ अग्रसर गौरा के दर्द को केवल एक अति संवेदनशील व्यक्ति ही महसूस कर सकता है। इतना दारुण संस्मरण जिसे पढ़ते हुए पाठक के कलेजे में हूक उठने लगती है उस संस्मरण को साक्षात् जीने वाले की पीड़ा का अनुभव करने की सोच ही रोंगटे खड़े कर डालती है।

गाय एक ऐसा पशु है जिसे सनातन धर्म में सर्वोच्च पूजनीय स्थान प्राप्त है। हिन्दु शास्त्रो के अनुसार इस एक मात्र जीव में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास है। यहाँ इस तथ्य की प्रामाणिकता की बात नहीं कि जा रही लेकिन इसमें कोई दोराय नहीं कि गाय लगभग हर घर में पूज्य है और इस नाते गाय के प्रति किसी के भी स्वाभाविक लगाव को समझा जा सकता है।

2) निम्न पत्र को यथोचित प्रारूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08
सजावट : 02
कुल अंक : 10

उत्तर प्रदेश सरकार
गृह मंत्रालय, लखनऊ

क्रमांक – हिन्दी /अशा व /22-23/2023 दिनांक : 7 मई, 2023

प्रिय .....

आपको पत्र संख्या – हिन्दी / अशा व /22-23/2023 दिनांक 8 जनवरी, 2023 के उत्तर में मैं आपको मेरी ओर से निम्न सुझाव प्रस्तुत करता हूँ –

1 - इस देश में हमे राजभाषा के रुप में हिन्दी का उपयोग करते हुए लगभग 70 साल से भी अधिक का समय हो गया है, किन्तु आज भी हम दैनिक राजकाज में अंग्रेजी का अधिक से अधिक उपयोग कर रहे हैं। अत: कुछ इस प्रकार के ठोस उपाय किए जाएं जिससे हिन्दी भाषा का सरकारी राजकाज में अधिक से अधिक प्रयोग हो सके ।

2 - हिन्दी पढ़ने – लिखने वाले सरकारी कर्मचारियों को राजकाज के पत्र व सूचनाओं के प्रेषण में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन स्वरुप सम्मान एवं नकद पुरस्कार देने की व्यवस्था भी की जा सकती है।

3 - इस बाबत मैने पूर्व में भी आपको पत्र व्यवहार के माध्यम से अवगत कराने का प्रयास किया था । इस पर विचार करने के लिए दिनांक 20 जून, 2023 को मेरे कक्ष क्रमांक - 21 में चार बजे सायं बैठक रखी गई है, जिसमें आप उपस्थित होकर अपने विचार प्रस्तुत करें ।

भवन्निष्ठ,
(.....)

श्री .....
अध्यक्ष केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
लखनऊ

3) निम्न सारणी को यथोचित रूप में टंकित कीजिए :

टंकण अंक : 08
सजावट : 02
कुल अंक : 10

प्रधानमंत्री आवास योजना की
अधूरी निर्माण प्रगति सूचना

क्रं.सं	नाम	पिता का नाम	गांव	वर्ष	जारी किश्त (रुपयों में)
1	राजू	पन्ना	ढोबड़ा	2019-20	45,000
2	डालू	प्यारे	दाँता	2019-20	45,000
3	गोलू	दयाल	निमाना	2019-20	20,000
4	कमल	नवल	नयागांव	2019-20	15,000
5	नव्यांश	काव्यांश	नवलपुर	2019-20	15,000
6	दिव्यांश	पूर्वांश	दिलावर	2019-20	20,000
7	बाबू	रुपा	कंवरपुरा	2021-22	22,000
8	मितांशी	दिव्यांश	कमलपुर	2021-22	45,000
9	निष्ठा	गोपाल	रंगपुर	2021-22	40,000
10	मोहनी	सोहन	डोला	2021-22	45,000

DO NOT WRITE ANYTHING HERE